श्री हरिः ॐ तत्सत् ॐ

श्री गीता सत्सङ्ग-आश्रम

श्री कैलास द्वार [illegible] (हिमालय) अल्मोड़ा

की

नियमावली

तथा

श्री कैलाश यात्रा मार्ग

श्री कैलासयात्रा वर्णन

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, बी० ए० वेदान्ताचार्य

संस्थापक तथा डाइरेक्टर :—

श्रीमन् महाराज श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी

बी० ए०, वेदान्ताचार्य

मंत्री :—

श्री लीलाधर शास्त्री

'आङ्गिरस'

(यह पुस्तक पं० चन्द्रमौलि जी मिश्रा बड़ा बाजार, बरेली
वालों ने आश्रम की सेवा में प्रकाशित कर
आश्रम को अर्पित की है। आश्रम
की ओर से उनके सत्प्रेम
के लिये धन्यवाद)

प्रकाशक :—

पं० चन्द्रमौलि जी मिश्रा

बड़ा बाजार, बरेली।

भूमिका

श्रीमान्, पाठकवृन्द, आपके समक्ष मैं अपने 'श्री कैलाश तथा मानसरोवर धाम' विषयक उद्गारों को व्यक्त करते हुये निवेदन करता हूँ कि—

'श्री कैलाश तथा मानसरोवर धाम' हमारे वेद शास्त्रों में पवित्र सम देवलोकीय तीर्थ प्रतिपादित किया है अनुभव से भी यथार्थ ही विदित होता है। मैं प्रायः भारतवर्ष के सभी तीर्थों को यात्रा कर चुका हूँ, इसके अतिरिक्त कई विदेशीय यात्रा भी मैं कर चुका हूँ पर मुझे श्री कैलाश धाम के सदृश प्राकृतिक चमत्कारों से परिपूर्ण मनोहर दृश्य तथा उत्तम जलवायुपूर्ण आध्यात्मिक शक्ति को स्वतः विकसित करने वाला तीर्थ अन्यत्र नहीं दिखाई दिया। यहां शंकर भगवान की प्रेरणा से प्रेरित होकर प्रति वर्ष सैकड़ों हजारों की संख्या में साधू सन्त तथा गृहस्थी यात्री पहुंचते हैं। दुःख की बात है कि यात्रियों को इस तिब्बतीय भूमि में, जहां पर करीब एक महीने का समय आवश्यकरूप से भ्रमण करना पड़ता है, किसी प्रकार के जाधन निर्वाहक साधन व सेवक नहीं मिलते हैं प्रत्युत वहां के वासिन्दों से भय तथा चोर डाकुओं का खतरा रहता है। इन लोगों की भाषा भी भारतीय लोगों के समझ में नहीं आती है इनके रहन सहन भी ऐसे अजीब होते हैं कि हम लोग शरीक नहीं हो सकते हैं। पैसा पल्ले में होने पर भी हमें सुभीते प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इनके साथ व्यवहार करने के लिये एक ऐसे द्विभाषिये की आवश्कता पड़ती है जो तिब्बतीय और भारतीय भाषा को जानता हो। ऐसे व्यक्ति प्रायः ओहार

में ही मिलते हैं जो कि भारत का कुमाऊँ गत अन्तिम प्रदेश है और जहां से तिब्बत यात्रा का आरम्भ होता है। यह बिल्कुल वीरान भूमि है, सात महीने यह भूमि बिल्कुल बर्फ से आच्छादित रहती है, वैशाख से आश्विन तक खुली रहती है, अतः यहां दो फीट से ऊंचा वृक्ष नहीं होता है केवल 'डामा' नाम के कांटेदार पौधों की झाड़ियां ही मैदानों में दिखाई पड़ती हैं जाड़ा ऐसा होता है कि हिममयी वायु में ही मग्न रहना पड़ता है। इस प्रकार की परिस्थितियों के कारण शंकर भगवान के मूलालय रूप कैलाश-कमल के दर्शन-पराग के लोलुप कई भक्त-भ्रमण साधनों के अभाव में शरीर भी खो बैठते हैं। मैं भी प्रथम बार श्री चन्द्रमौलि शंकर भगवान की कृपा प्रेरणा से जब श्री कैलाश परिक्रमा के लिये पहुंचा था, तो साथियों से बिछोह हो जाने पर ऐसी स्थिति में आ पहुंचा जहां पर ८ दिन तक आध्यात्मिक साधनों के अलावा दूसरे साधनों से बिल्कुल रहित हो चुका था। नाना प्रकार के प्रयत्न करने पर भी कोई साधन उपलब्ध न हुआ। कारण यह था कि रास्ता ही समझ में नहीं आता था, क्योंकि यहां गांव, सड़क, पुल का तो कोई प्रबन्ध ही नहीं है। अन्त में जब सभी प्रकार के प्रयत्नों से असफल होगया। तब स्वयं भक्त-वत्सल शंकर ने पथ-प्रदर्शक बनकर यथार्थ रास्ते में रखने का अनुग्रह किया सद्गुरु कृपा से शरीर नहीं छूटा। तदुपरान्त इन प्रभावों से मन में यही प्रभाव पड़ा कि मैं अपने जीवन का शेष अंश भी कैलाश यात्रियों की ही सेवा में व्यतीत करूं। इस सन् '४६ में मैं उपलब्ध साधनों से सेवा करते हुये श्री कैलाश धाम की आठवें वर्ष की परिक्रमा कर चुका हूं। अब आश्रम की निगाह में पड़ने वाले यात्री रास्ते के भ्रम में नहीं पड़ सकते हैं। साथ २ छोटी मोटी सेवा भी प्राप्त कर

लेते हैं क्योंकि अभी आश्रम की आर्थिक अवस्था बाल्यकाल में ही हिलोरें ले रही है।

उक्त लक्ष्य को धारण कर मैं तिब्बत में व्यापार करने वाले जोहारी लोगों से सम्पर्क बनाता रहा तथा प्रतिवर्ष के खर्चों को प्राप्त करता हुआ यह अध्ययन करता रहा कि कौन सा साधन बनाया जाय कि जिसमें यह कार्य चिरकाल पर्यन्त चालू रहे। वेदों के प्रधान लक्ष अद्वैत आत्म-विज्ञान का बोधक प्राकृतिक साधन शिव-शक्तिमय 'श्री कैलाश' तीर्थ बिना साधन व संधकों के न मालूम अतीत के किस समय से भारतीय विज्ञान के अनुयाइयों से बिछुड़ा सा पड़ा है जो हम वेदिक धर्मावलम्बी भारतीयों के लिये कलंक की बात है। श्री कैलाश के मठाधीश तिब्बतीय लामा भी कहते हैं कि हमारे धर्म की माता भारत में है। इस बात की याद ने मुझे बहुत बेचैन किया। अन्त में सद्गुरु देव व श्री शंकर भगवान की कृपा से यह भाव अन्तःकरण में जमा कि एक आश्रम श्री कैलाश द्वार स्वरूप मुन्स्यारी इलाके में खोला जाय जो श्री कैलाश यात्रियों के प्रबन्ध के साथ २ स्थायी रूप से वैदिक धर्म (गीता धर्म) प्रचार, शिक्षा प्रचार तथा गृहस्थों को योग का मुख्य अंग सन्ध्या तथा त्यागियों को उपनिषदीय विधान से साधना की शिक्षा दे तथा राजनैतिक धार्मिक शिक्षा का भी प्रचार करे क्योंकि जब तक श्री कैलाश के निकटवर्ती भारतीयों को सुबोध नहीं बनाया जायगा तब तक लक्ष्य का हल होना असम्भव है। अतः सन् '४८ प्रथम जुलाई के दिन उक्त लक्ष्यों से लक्षित आश्रम का उद्घाटन मुन्स्यारी (हिमालय) अल्मोड़ा में हो चुका है। जिसके भविष्य में चलने के लिये चैरिटेबुल ट्रस्टीशिप क़ायम की जा रही है।

बहुत से मेम्बर हो भी चुके हैं जो सुन रहे हैं गद्गद् होकर मेम्बर बनते जा रहे हैं।

श्री कैलाश धाम की प्रदक्षिणा, परिक्रमा जोहार श्री तीर्थपुरी श्री कैलाश मानसरोवर होते हुए व्यास के रास्ते से लौटने पर ही होती है। कई लोग अबोध यात्रियों को दारमा व्यास से श्री कैलाश परिक्रमा की अनुमति देते हैं। यह शास्त्र विरुद्ध है। साथ २ दूनी कठिनाइयों से युक्त मार्ग का सामना करना पड़ता है। श्रीमान् महाराजा मैसूर ने जब अत्यधिक धन व्यय करके श्री कैलाश की यात्रा की है तो उनको भी ऐसे ही सलाहकारों ने वञ्चित कर धाम परिक्रमा कराई है यात्रियों को इस बात पर ध्यान देना चाहिये। इसी हेतु से आश्रम जोहार के आरम्भिक प्रदेश मुन्स्यारी में खोला गया है। अन्यत्र शाखाश्रम संस्थापित किये जा रहे हैं।

अब श्री कैलाश यात्रियों को उक्त आश्रम से सम्पर्क बांधकर नियमावली मंगाकर सुखपूर्वक श्री कैलाश तीर्थ यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।

निवेदक :—

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती,

बी० ए० वेदान्ताचार्य्य।

नमः शिवाय

श्री गीता सत्सङ्गाश्रम

श्री कैलाशद्वार मुन्स्यारी हिमालय (अल्मोड़ा)

श्री कैलाश मानसरोवर यात्रा-विवरण

हरिः ॐ तत्सत् ॐ नमः शिवायै च नमः शिवाय ।

ॐ स जयति सिन्धुर वदनो, देवो यत्पाद पङ्कजस्मरणम् ।
वासर मणि रिव तमसां, राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥

ॐ हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्यसम प्रभां,
पाशाङ्कुश धरी सौम्यां वरदाभय हस्तकाम् ।
त्रिनेत्रां रक्त वसनां भक्त काम दुघां भजे ॥२॥

ॐ पशूनांपतिं पापनाशं परेशं,
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूट मध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं,
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥३॥

ॐ नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते,
नमस्ते नमस्ते चिदानन्द मूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपो योग गम्य,
नमस्ते नमस्ते श्रुति ज्ञान गम्य ॥४॥

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षि भूतं,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥५॥

ॐकार वाच्य, सशक्तिक परमात्मा के निर्गुण तथा सगुण विग्रह के समभाव बोधक 'श्री कैलाश मानसरोवर धाम' को, वेद, शास्त्र, पुराण, ऋषि, मुनि, सन्त, महात्मा आदि 'सद्ग्रन्थों' ने अलौकिक विभूतिमय तीर्थ प्रतिपादित किया है, तथा भूलोक का मस्तक अर्थात् देवलोक बताया है। अब भी भावुक व श्रद्धालु व्यक्तियों को तद्रूप ही भासता है। जो भी सत्यात्मा के अन्वेषक इस तीर्थ यात्रा से लौटते समय मिलते हैं उनके मुख से यही शब्द निकलते हैं—धन्य है, आश्चर्य है, अवर्णनीय है वह शक्ति जिसकी श्री कैलाश मान:सरोवर रूप व्यक्त विभूति है। इस यात्रा में मानव शक्ति, माननीय अभिमान, जो परमात्मा की प्राप्ति में महान रिपु की तरह बाधक हैं, प्राकृतिक स्थितियों से ही चूर २ हो जाते हैं। अहंकार रूप रिपु के नष्ट होते ही प्रकृति देवी, जो अविद्या रूप से जीव को, सच्चिदानन्दघन परमात्मा से पराङ् मुखीन बनाये रहती है, समष्टि (संसार) व्यष्टि (व्यक्ति) गत सत्य, चैतन्य, आनन्द, व्यापक स्वतः प्रकाशमान् केवल अद्वैत परमात्मा के अनन्त, अगाध, आनन्दसागर में प्रेम से गोता लगाने के लिये किवाड़ खोल देती है। यात्री स्वभावतः यह भूल जाता है कि मैं कौन हूँ? कौन मेरे नातेदार हैं? क्या मेरी सम्पत्ति है? और मेरे भाव अभाव में उसका क्या होगा? केवल शरीर रक्षा के सामान्य साधनों की स्वाभाविक मांग मात्र ही कभी कभी याद आती है। अब

यात्री भारतीय सीमा के 'जोहार प्रदेश' के अन्तिम ग्राम 'मिलम' में पहुंचता है और यात्रियों के काफिले की "नमः पार्वतीपतये हर हर हर!" वैराग्यमयी ध्वनि सुनता है तब उसके अन्तःकरण में जो मोह विछोह की सनसनी फैलती है, वह हृदय को उस प्राणेश के प्रेम में जो चराचर जगत का धर्ता हर्ता है, गद्गद् करदेता है। साथ २ उस शंकर की स्मृतिगत मूर्ति को प्रेम परिपूर्ण अस्थिर नेत्रों से निकलने वाली जलधारा से स्वाभाविक स्नान भी करा देती है। इस समय बाजे के आगे से लहराने वाली 'श्री कैलाश की ध्वजा', प्रत्येक यात्री को जिन्होंने, मातृभूमि, भारतीय सीमा को पार कर उस वीरान, वृक्ष तथा खेती से हीन, राज्य शासन से अपरिचित, नाना प्रकार के मानवीय आवश्यकताओं से रहित, परस्पर की चर्चाओं से बताई जाने वाली, संकटमयी 'लासा' राज्यान्तर्गत, तम्बू के डेरों में रह आयन व्यतीत करने वाले हूणों की वसाहतमयी, मैदानी निर्वचनीय भूमि में, हिमालय पार करके यात्रा करनी है, यह बताती है कि तुम्हारे पापों को भगवान शंकर की कृपा मुझ 'ध्वजा' की भांति दक्षिण प्रवाही हवा की तरह अन्तःकरण से हिला २ कर भगाने लगी। अब स्वतः होने वाले स्मरणपूर्वक स्वच्छ हृ यात्रा करो। बाजे शंकर भगवान की ओर से तुम्हारे मंगल और स्वागत गान गा रहे हैं। 'मिलम ग्राम' की उत्तर पूर्वीय दिशा में स्थित, जहां से गांव आँखों से ओझल हो जाता है, भगवती नन्दा के मन्दिर से यात्री सांसारिक मोह से मुक्त होकर एकाग्रता से भगवान चन्द्रमौलि शंकर का ही श्रवण, कीर्तन मनन करता हुआ 'श्री कैलाश यात्री' के परिपक्व ध्येय से परिपूर्ण होता हुआ नित्य नये दृश्य नई आबहवा में विचरता हुआ, देव दुर्लभ जीवन व्यतीत करता हुआ, एक मास भर

तिब्बत के गगन चुम्बी मैदानों के विहार का सुख प्राप्त करता है, पुनः 'श्री तीर्थापुरी' 'श्री कैलाश' 'श्री मानःसरोवर' श्रुति शास्त्र प्रसिद्ध तीर्थों की यात्रा करता हुआ जब शैवी वायु से मिश्रित वैष्णवी भूमि 'खोचर नाथ' में भारत की स्थिति का स्मरण करता है तब वह दांतों में अंगुली दबाकर कहता है—"धन्य शंकर! धन्य कैलाशपते! धन्य परमात्मन्! तेरी शक्ति धन्य है! तेरी विभूति धन्य है! आश्चर्य है! चमत्कार है! मैं धन्य हूं! मेरे पितर धन्य हैं! सभी यात्री धन्य हैं! ये मैले कुचैले लामा हूंण, पशु पक्षी धन्य हैं! जो नित्य इस स्वच्छ वायु, जल, आकाश, भूमि में विहरते हुये नित्य आपका दर्शन प्राप्त करते हैं और निर्द्वन्द्व होकर विचरते हैं।" इस प्रदेश (दामा-व्यास के सिरे) में पहुंचने पर प्रत्येक यात्री अपने कृतकृत्य, मुक्त, मस्त की स्थति में पाता है। पुनः ज्यों ज्यों भारत की ओर बढ़ता जाता है त्यों त्यों उसको वैष्णवी विभूति मिलती जाती है। नाना प्रकार के वृक्ष, फल, सस्यपरिपूर्ण भूमि नाना प्रकार के भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पेय पदार्थ देखने और भोगने में आते हैं। राज्य-प्रबन्ध के भी सुख प्राप्त होते हैं उस वक्त उसके चित्त में यह भाव रहता है। कि मैं स्वर्ग की यात्रा करके भूलोक में पहुँचा हूँ।

जिस व्यक्ति ने आजीवन, तन्दुरुस्ती का सुख न भोगा हो जिन्हें भूख नींद का आश्वासन न मिला हो वे इस यात्रा से लौटकर ऐहिक पारलौकिक सुखों का अनुभव करने लग जाते हैं।

जिन्हें विद्या पढ़ते २ योग, जप, तप, ध्यान, यात्रा करते २ सन्तोष न हुआ हो उन्हें इस यात्रा से लौटने पर यह स्वयं भास होने लगजाता है कि मैं सर्वज्ञ हूँ। कैलास

यात्रा किये बिना जो किताबों के पढ़ने या मोटर, रेल, जहाज की सवारी से अपने को कृतविद्य या कृतयात्री समझ बैठे हों वे महामूर्ख और आलस्य के ढेर स्वरूप हैं। यह बात भी सत्य है सब कुछ होने पर भी जो व्यक्ति श्री कैलास यात्रा न किया हो उसकी आकांक्षा बनी हुई है अतः वह अपूर्ण ही है। सब विद्याओं का परिणाम है भक्ति, वैराग्य, सन्तोष, ज्ञान ये चीजें बिना ऐसी यात्रा किये नहीं हो सकते हैं। मनुष्य जीवन के इतने महान् अर्थ को डेढ़ ही महीने में पूर्ण करने वाली श्री कैलास यात्रा साधन और सेवकों के अभाव में पड़ोस ही में होते हुये भी, करोड़ों, अरबों जीव बिना मनुष्य जीवन के फल को प्राप्त किये ही निरर्थक गर्भवास, जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु को झेलते हुये नाना प्रकार के दुःख पूर्ण जीवनों में अज्ञान और आसक्ति की ज्वालाओं में जीव को तपाते रहते हैं, एक बार भी यदि श्री कैलासपति के सगुणिक सगुण दर्शन किये जांय तो जीव प्रथम तो विद्यमान शरीर से ही मुक्त हो सकता है, अन्यथा जन्म भी ले तो उत्तम योनि में उत्तम कर्म करने के लिये ही जन्म लेगा। जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ और प्रशंसनीय होगा।

यात्रियों की सुव्यवस्था के लिये श्री शंकर भगवान् के सगुण मानवावतार श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी महाराज परिव्राजकाचार्य ने उक्त आश्रम की इस प्रकार की नींव डालकर संस्थापित कर दिया है जो मानवीय सृष्टि पर्यन्त भक्तों की ट्रस्टीशिप तथा उत्तम कोटि के दानों के द्वारा चलता ही रहेगा। यह आश्रम मनुष्य जीवों के लिये इस लोक परलोक को स्वर्णमय बनाने के लिये चारों उद्देश्यों

को, नये २ शाखाश्रम खोलकर:- (१) श्री कैलाश यात्रियों के सुभीते, (२) श्री गीता धर्म प्रचार (३) शिक्षा प्रचार (४) योग साधना उपयोग में लाने लगा है। १००), ५०), २५) प्रतिवर्ष सहायता देने वाले २०० से ज्यादा ट्रस्टी सदस्य भी हो चुके हैं। ॐ सद्गुरुवे नमः।

अब इस ग्रन्थ में श्री कैलास यात्रा का मोटर स्टेशन अल्मोड़ा गत गरुड़ स्टेशन से संक्षिप्त विवरण लोक सेवा में उपस्थित किया जाता है।

श्री कैलाश यात्रा की प्रदक्षिणा क्रम से परिक्रमा का मार्ग, जो रेलवे स्टेशन काठगोदाम (हल्द्वानी) होते हुये मोटर स्टेशन गरुड़ से आरम्भ होता है तथा श्री गीतासत्सङ्गाश्रम मुन्स्यारी, भारतीय सीमा पर बसा हुआ अन्तिम ग्राम मिलम श्री तीर्थापुरी, (तिब्बतस्थ प्रथम तीर्थ) श्री कैलास श्री मानसरोवर होते हुये लीपूरनाथ होते हुये जिला अल्मोड़े के पूर्वोत्तर तिब्बतीय सीमा से, भारत लौटने में, पूर्ण परिक्रमा करवाता है उसका पड़ाव प्रति पड़ाव के क्रम से वर्णित किया जाता है:—

१—यात्री को 'हल्द्वानी' (काठगोदाम) रेलवे स्टेशन पर उतरने पर हल्द्वानी में टिकने का स्थान 'बच्चीगौड़ की धर्मशाला' मिलेगा। यह बीच बाजार में मोटर स्टैन्ड पर ही पड़ता है। यहीं पर पानी की नहर भी है। यहां से पहाड़ पर चढ़ने के लिये 'हल्द्वानी टु गरुड़' मोटर टिकट लेना पड़ता है जिसकी कीमत ५) के करीब होती है।

[२] गरुड़—हल्द्वानी से ७॥ बजे मोटर में बैठकर शाम के ५ बजे गरुड़ में पहुंचा जाता है। इस दिन छोटा, कलायनी

सन्तरे, दाड़िम के अलावा कोई भी चीज नहीं खानी चाहिये अन्यथा उल्टी होने का डर रहता है। गरुड़ में बाजार और होटल मिलेंगे। यहां पर आश्रम का आदमी मिलेगा।

[३] बागीश्वर—गरुड़ से मैदानी रास्ते में पैदल चलते हुये १२ मील बागीश्वर ६ घण्टे का आराम वाला रास्ता है। बागीश्वर 'कूर्माञ्चल काशी' कहलाती है। श्री सरयू तथा गोमती नदी के किनारे पर बसा हुआ तीर्थ है। यहां पर 'बाग्नाथ' जी का गगन चुम्बी प्राचीन मन्दिर है। बाजार अस्पताल, पोस्टआफिस आदि सभी साधन हैं।

[४] कपकोट—बागीश्वर से सरयू के किनारे २ मैदानी रास्ते से चलते चलते शाम को १४ मील दूरी पर कपकोट बाजार मिलेगा। यहां पर भी प्राचीन मन्दिर और किले के निशान हैं, डांक बंगला, अस्पताल, सरयू स्नान सभी सुभीते हैं। डांक बगले से एक मील आगे सरयू पार पुल से करके 'ऐंस्थान' नामक ग्राम में उक्त आश्रम का शाखाश्रम बन रहा है।

[५] शामाधूरा—कपकोट से शामाधूरा ११ मील भोजन करके ६ बजे सुबह से यात्रा आरम्भ करने पर शाम के पांच बजे पहुँचा जाता है। ३ मील की सामान्य चढ़ाई है रास्ते में कोई साधन नहीं मिलते हैं गांव लगातार हैं। शामाधूरा में डांक बंगला, दुकान, पोस्ट आफिस मिलेंगे।

[६] कींटी—शामाधूरा से रामगंगा तक ५ मील उतार है। गंगा में पुल मिलेगा। रामगंगा से कींटी ५ मील है। यहां पर गांव है, सरकारी पड़ाव नहीं है पर रावल घराने में

रहने को स्थान मिल सकता है। यहां पर दुकान तथा सम्पन्न गांव हैं, भोजन की चीजें खरीदने पर मिल सकती हैं। यहां से ५ मील पर सरकारी पड़ाव गिरगांव है। यहां पर डांक बंगला है। सामान नीचे से ही रखने पर शामाधूरा से 'गिरगांव' ही जाना ठीक होता है। शाम के समय एक मील की चढ़ाई पड़ती है। दूसरे दिन आश्रम में जाने का सुभीता होता है। कौंटी से आश्रम के लिये लम्बा पड़ाव हो जाता है जिसमें से ५ मील कड़ी चढ़ाई है, उसके बाद ७ मील जंगल में चलकर आश्रम मिलता है। कौंटी से १७ मील का विकट पड़ाव हो जाता है।

[७] मुन्स्यारी—गिरगांव से कालामुनी पहाड़ पार करके बसासत के आरम्भ में ही श्री खुशहाल सिंह जी रावत की धर्मशाला मिलती है। यहां पर आश्रम के ही आदमी मिल जाते हैं।

[८] "श्री गीतासत्सङ्गाश्रम" मुन्स्यारी—धर्मशाला से १ मील पश्चिम की ओर आश्रम है। आश्रम के पूर्व में पांच फणों से युक्त शेषनाग की भांति शोभायमान बारहों महीनों में हिमाच्छन्न अप्रतिम शोभामय पञ्चाचूली है। आश्रम में पहुंचने पर कुछ दिन आराम तथा सत्सङ्ग करके तब 'आश्रम का काफिला' निश्चित तारीख के दिन सभी साधनों के साथ 'श्री कैलास' के लिये प्रस्थान करता है।

[९] बगुड्यार—मुन्स्यारी आश्रम से १३ मील पर है। आश्रम से तीन मील दूरी पर श्री गोरीगंगा के दर्शन होते हैं। यह गंगा 'श्री नन्दा देवी' के मूल से, 'श्री शाण्डिल्य कुण्ड' से तथा 'कुटाधूरा' से एकत्रित होते हुये सारे ओहार को पार

पार में विभक्त करती हुई नाना प्रकार के प्रपातों के दृश्य बनाते हुये जौलजीबी काली में मिल जाती हैं। इसी के किनारे २ बगुड्यार १३ मील पर चिन्ना बसासत का ग्राम पड़ाव पड़ता है। यहां पर डाक बंगला तथा डाक चौकी है।

[१०] १–रिलकोट–बगुड्यार से १० मील जोहार का प्रथम गांव मिलता है। छोटा बगुड्यार से१३मील। २–मर्तोली यह २॥ सौ मवासे का स्मरणीय गांव है। यहां का दृश्य अवर्णनीय है। यहां से वह पर्वत दिखाई देता है जहां से भगवती की उत्पत्ति शास्त्रों में वर्णित है। जिससे दुर्गा मन्दिर बनाने की सारे भारत में प्रथा चली है। इस पर्वत का ही नाम नन्दादेवी'है। यहां पर अब भी भगवती की विभूति विद्यमान है। यहीं हिमवान की पुत्री हैमवती, उमा, पार्वती, दुर्गा करके वेद शास्त्रों ने बताई है। उपासकों को अब भी दर्शन देती है। इसकी दक्षिण जिह्वा मणि कोट, वाम जिह्वा मर्तोली सम्मुख जिह्वा 'चिल्ठा' (मल्लादानपुर में) मानी जाती है इसी प्रकार 'पाछू' जोहार में भी एक जिह्वा है। चारों दिशाओं में ६ जिह्वायें हैं जो शक्तिमय हैं। श्री कैलाश पति-स्वरूप' और नन्दा 'पार्वती देवी 'पत्नी स्वरूप' शास्त्र में वर्णित है। 'श्री कैलास' नामक मासिक पत्रिका में यह सब वर्णन दिये जायेंगे। बगुड्यार से मिलम पर्यन्त उस विश्व रचियता विश्वकर्मा की शिल्प कला की निपुणता जानी जाती है जो कलम स्याही से व्यक्त नहीं की जा सकती है। जब यात्री बगुड्यार से आगे कदम रखता है तब उसको ऐसा दृश्य दिखाई देता है कि पूर्व तथा पश्चिम में ग्रह नक्षत्रों से बातें करते हुये अगम्य पर्वत शिखर उनके उत्तर दक्षिण वाही गोरी नदी जिसमें बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े बहते

हुये आरहे हैं। कानों में गंगा के प्रपातों तथा प्रवाहों से ऐसी ध्वनि अपना अधिकार बना लेती है जिसमें नाना प्रकार के वाद्यों से युक्त अप्सराओं के राग रागिनी गत अलाप हों। गंगा तथा चट्टानों के अतिरिक्त भूमि से यही विदित होता है कि प्रकृति देवी ने विशिष्ट रत्नों से जटित हरी चादर ओढ़ी हो। असंख्य रूप रंग वाले पुष्पों के अलावा मिट्टी भी गन्ध प्रवाहित करती है। नाना प्रकार की पुष्पित लतायें तथा निकुञ्जों की तो रूपकला जटिल हो जाती है। सृष्टिकर्त्ता की मनोहारिणी कला को देखकर कवि, चित्रकार, गवैये, योगी सभी संज्ञाहीन और मुग्ध से हो जाते हैं। यथार्थ में यह भूमि स्वर्ग भूमि है। यहां देव योनियां विहार करती हैं। नाना प्रकार की बूटी यहां उगती हैं। धूप यहां के सदृश भूलोक में शायद ही मिलेंगे। गुग्गुल, बिल्ल, जटामासी, सम्यो आदि अनन्त धूप, भूर्ज-पत्र के वृक्ष जंगल के जंगल, शालम मिश्री, हथजड़ी, बालछड़ी, जम्बू, गन्दरायणी, तेलिया विष, कुंकुम न मालूम क्या २ भगवान ने यहां बना डाला। कस्तूरा मृग, थार, थरिण आदि मृग भी यहां होते हैं। यहां मक्खी, बिच्छू, सांप, मेंढक, जोंक, मच्छर, पिस्सू, खटमल आदि जीव कुछ भी नहीं होते हैं। यहां दुर्गन्ध वाले पदार्थों से भी दुर्गन्ध नहीं आती है। सारी भूमि में बारीक २ घास तथा रंग बिरंगे छोटे बड़े पुष्पों से गलीचे से बिछे हुये रहते हैं। क्या कहा जाय! विश्व रचियता ने भूलोक में हिमालय तथा हिमालय की गोद में बसे हुये प्रदेशों को रचते समय अपनी बुद्धि तथा कारीगरी को निस्सीमित सा किया हुआ जान पड़ता है। मलौली से २ मील तुर्फू, वहां से २ मील बिल्जू, वहां से ३ मील मिलम, इन्हीं ग्रामों के रूप में उक्त सौन्दर्य से परिपूर्ण जोहार बसा हुआ है। यहां करीब सभी

गांवों में २ हज़ार से ज्यादा मवासे बसते हैं ये जोहारी 'शौक' कहलाते हैं। यह लोग पक्के व्यापारी, दानी तथा शौकीन ब्राह्मण क्षत्रिय ही यहां की सुन्दरता पर मोहित होकर पीढ़ियों से यहां ६ मास के लिये रहते हैं, जाड़ों में गर्म प्रदेशों में आ जाते हैं। इस भूमि का वर्णन करना असम्भव है। इसका आनन्द बिना देखे नहीं आ सकता है। कार्तिक से बैसाख तक यह सब प्रदेश बर्फ के पर्दे में रहता है।

[११] मिलम—मर्तोली से ७ मील, अल्मोड़ा से १०८ मील दूरी पर बहुत घनी आबादी से बसा हुआ जौहार का आखीरी गांव है। इसके दक्षिणी हिस्से में उत्तर पूर्व से बहती हुई 'गुंजा' नाम की गंगा, गोरी नदी में मिल जाती है। 'मिलम' के उत्तर पश्चिम में शाण्डिल्य कुण्ड से गोरी नदी आती है। शाण्डिल्य कुण्ड शाण्डिल्य मुनि का स्थान बताया जाता है। यहां से कुछ आगे सूर्य कुण्ड है। यह दोनों स्थान ग्लेशियर में हैं। मिलम से करीब १० मील दूरी पर उत्तर पश्चिम में स्थित है। यहां की भूमि तथा पुष्प वाटिका की शोभा अवर्णनीय है। मिलम में बाज़ार, धर्मशाला, दुकानें आदि सभी साधन मिलते हैं। यहां पर श्री कैलास जाने वाले यात्री एकत्रित होकर १ महीने के भोजन, आच्छादन तथा सवारी के साधन तैयार करके ध्वजा, बाजा वगैरह लेकर 'काफिले' के रूप में तिब्बत के लिये प्रस्थान करते हैं। मिलम से सवारी सामान यात्रा के लिए गाइड, नौकर तिब्बत की पूरी यात्रा के लिये साधन रखकर भारत से बाह्य देश तिब्बत की यात्रा का आरम्भ होता है। यहां से आगे बिना काफिले के तथा बिना जोहारी लोगों की सहायता के जाना असम्भव सा विदित होता है। अतः

मिलम ही में यह सब इन्तजाम तय किये जाते हैं। प्रायः 'मिलम' छोड़ने के बाद ब्यास आने तक करीब एक महीने तक तिब्बतीय भूमि में ही यात्रा का समय बीतता है।

[१२] 'टुङ्ग उडियार'—मिलम से यह स्थान कुछ २ चढ़ाई पार करते हुये 'गुंखा नदी' के किनारे २ चलते हुये १० मील दूरी पर तीन गङ्गाओं के बीच में तथा ऊंटा धूरा की जड़ पर स्थित है। यह बात निश्चित है कि मिलम से आगे गांव बसासत तथा खेती नहीं मिलते हैं। यहां से 'श्री कैलाश यात्रा' में सब से कठिन मार्ग तीन धूरों 'ऊंटा धूरा, जयन्ती धूरा और कुङ्ङ्री बिङ्ङ्री धूरा' की यात्रा आरम्भ होती है। टुङ्ग उड्यार से सुबह ६ बजे यात्रा आरम्भ करनी पड़ती है।

[१३] म्हजगांव—टुङ्ग उड्यार से १० मील पर म्हजगांव' बर्फानी पड़ाव है। टुङ्ग से जो यात्रा आरम्भ होती है वह हिमालय के पुराने से पुराने ग्लेशियरों के ऊपर होती है यह बर्फ सिमेन्ट की भांति पहाड़ के रूप में जमा है। अन्वेषक लोग कहते हैं सारे तिब्बत के नीचे बर्फ ही बर्फ है। कहीं पर यह व्यक्त है कहीं पर अव्यक्त। इस दिन प्रथम जो पांच मील के भीतर १॥ मील की सख्त चढ़ाई है उसको ऊंटाधूरा' कहते हैं। इसकी ऊंचाई समुद्री सतह (Sea Level) से करीब १८००० फीट है। इसकी चोटी पर पहुँचने पर करीब आधा मील बर्फ के ऊपर तिरछा चलना पड़ता है तब 'जयन्ती धूरा' का आरम्भ हो जाता है। देखने में तो सामान्य चढ़ाई दीखती है पर चलना कठिन होता है। यहां पर हवा इतनी पतली हो जाती है कि स्वांस फूलने लग जाता है। पांव उठाना दुश्वार हो जाता है। लोग कहते हैं इसके इर्द

गिर्द में हड़ताल नामक विष के पहाड़ हैं जहां से वह हवा में उड़कर आता है, लोगों को नशा हो जाता है। यहां पर हरे चश्मे बहुत काम देते हैं क्योंकि चारों तरफ बर्फ ही बर्फ में दृष्टि पड़ने से आँखें चकाचौंध हो जाती है। कीलदार बूट, बल्लमदार लाठी, खट्टी चीजें सब ऐसे ही स्थानों में सुखदाई होती हैं। सवारी में यह दुख नहीं होते हैं। जयन्ती की ऊंचाई २२००० फीट मानी जाती है। इसकी चोटी में होकर पुनः 'म्हजगांव' के ग्लेशियर का उतार मिलता है। आराम से चलने पर इसी स्थान में पड़ाव करना होता है। बिना पक्के इन्तजाम के रात्रि में यहां रहना कठिन है। यही पड़ाव श्री कैलाश यात्रा भर में सबसे कठिन स्थान है।

[१४] सोमनाग—म्हजगांव से ८ मील दूरी पर है। इस पड़ाव में उठते ही १ मील की चढ़ाई में चढ़ना पड़ता है। यह तीसरी चोटी 'कुङड़ी बिङड़ी धूरा' नाम से प्रसिद्ध है। इसकी ऊंचाई करीब १७ हजार फीट है। यहां से बादल न होने पर बहुत दूर पूर्व उत्तर में 'श्री कैलास' के स्पष्ट दर्शन हो जाते हैं। यहां से आगे तिब्बतीय मैदान ही आते हैं। 'सोमनाग' जाने तक सामान्य उतराई की राह है। सोमनाग दो नदियों के सङ्गम पर एक मैदान है। यहां पर शालग्राम पत्थर तथा योरन्ती हड़ताल मिलते हैं। यहां से आगे चित्त स्वस्थ हो जाता है। तिब्बतीय, चूहे, खरगोश, श्यामवर्ण घोड़े दिखाई देने लगते हैं।

[१५] ठाजाङ—सोमनाग से ठाजाङ ८ मील दूरी पर पड़ाव है। जगह मनोहर है। पानी भी है। यहां पर कभी ज्ञोहारी और तिब्बतीय व्यापारियों की मण्डी लगती है। बसासत नहीं है। डण्डा प्रदेश होते हुये भी इन जगहों में

खूब धूप मिलती है। वृक्ष वगैरह कुछ भी नहीं केवल 'डामा' के बगीचों से भूमि आच्छादित रहती है जो कांटेदार १॥ फीट ऊंची झाड़ी के रूप में अलग अलग उगे रहते हैं। यह कच्ची कच्ची जलने वाली ईन्धन है।

[१६] वियालजिङ—ठाजाङ से १३ मील दूरी पर है। ठाजाङ से 'ज्ञानिमा मण्डी' के लिये बाईं ओर अलग रास्ता है, सड़क पुल कुछ नहीं हैं। ठाजाङ से ज्ञानिमा २ दिन का रास्ता है। दो नदियां पार करनी पड़ती हैं। बिल्कुल मैदान है किन्तु श्री कैलास यात्रा के पूर्व 'श्री तीर्थपुरी' स्नान दर्शन करना आवश्कीय होता है। अतः यात्री ज्ञानिमा की ओर न जाकर 'वियालजिङ' आते हैं। ज्ञानिमा व्यापारी मण्डी है। यहां से श्री कैलास की पहिली गुफा (मन्दिर) दो दिन की मैदानी राह है। 'वियालजिङ' में तिब्बतीय गांव हैं। यहां के लोग टेन्टों में रहते हैं। इनकी सम्पत्ति चवर गाय, बकरी तथा घोड़े हैं। यह लोग गृहस्थी तथा त्यागी बड़े ऊंचे दर्जे (आत्मसमर्पण कोटि) के भक्त होते हैं। सबसे बड़ी सन्तान श्री कैलास को चढ़ाकर लामा (ब्रह्मचारी) बना देते हैं। घर २ कीर्तन और भजन होते हैं।

[१७] खिङलुङ—वियालजिङ से १२ मील दूरी पर है। यह मानःसरोवर से निकलने वाली 'सतलज' नदी के किनारे बसी हुई तिब्बतियों की पक्की बस्ती है। यह एक गर्म घाटी है। यहां पर अनाज तथा साग बोया जाता है। इस नदी में पुल है। यहां पर बढ़िया २ गुफायें तथा मन्दिर हैं। इनका अधिकारी एक उत्तम कोटि का लामा है। यहां पर प्राचीन समय के कवच तथा अस्त्र शस्त्र हैं।

[१८] गुरुग्यम—खिङलुङ से गुरुग्यम १० मील दूरी पर है। यहां पर भी मन्दिर तथा गुफा हैं। यहां पर एक सिद्ध लामा रहता है। यहां पर भी डुग्पियों की बसासत है। इस गांव के किनारे २ सतलज नदी बहती है।

[१६] तीर्थापुरी—गुरुग्यम से तीर्थापुरी ६ मील दूरी पर है। यह ६ मील का रास्ता बिलकुल मैदान तथा सतलज के किनारे है। नदी का जल निर्मल तथा शीतल है। यह 'तीर्थापुरी' तीर्थ श्री कैलाश का पश्चिमी अंग है। इस तीर्थ में एक विशाल तथा कलापूर्ण बौद्ध मन्दिर है। बौद्ध भक्तों का आश्रम तथा गुफायें भी यहां पर हैं। यहां पर उबलते हुये पानी का स्रोत है जो जमीन से गज भर ऊंचा उछल कर गिरता है। इस पानी की मोटाई करीब १ फीट है। इसको बर्तन में निकाल कर ठण्डा करना पड़ता है तब स्नान किया जाता है। यहां पर भस्मासुर की देहावशेष विभूति का पर्वताकार ढेर पड़ा है। पुराणों में भस्मासुर की तपस्या से भगवान शंकर के प्रसन्न होकर भस्मकंकण वरदान रूप देने का विशद वर्णन है। इस कंकण की प्राप्ति के बाद 'भस्मासुर' को जैसे अहङ्कार ने घेरा है और पुनः शंकर भगवान ही को भस्म करने का जो प्रयत्न किया है उसका भी खूब वर्णन आता है। पुनः शंकर की ही आत्मा विष्णु ने मोहिनी स्त्री का रूप धारण कर उस असुर को मोहित कर उससे नृत्य करवा के हाथ के शिर में चले जाने पर 'भस्म होजा' ऐसा कहके भस्म करवाया और शंकर को बचाया यह पौराणिक गाथा इसी तीर्थापुरी में घटी है। उस भस्मासुर के शरीर का जो भस्म होकर ढेर होगया वही विभूति का टीला बना है। लोग इसको शंकर विभूति प्रसाद के रूप

में धारण करते हैं और घर भी लाते हैं। इसके लगाने से छल छिद्र का दोष दूर हो जाता है। 'यह तीर्थापुरी तीर्थ' तिब्बतीय तथा भारतीय लोगों के लिये बड़े महत्त्व का है।

[२०] दुन्च्यू—तीर्थापुरी से १४ मील पर 'दुन्च्यू' ग्राम है। यहां पर गुफा, बौद्ध मन्दिर तथा नदी है। यहां पर बौद्ध आश्रम में एक बालकलामा है जो अपने पूर्व जन्म के स्पष्ट वृतान्त बताता है।

[२१] श्री कैलास—प्रथम गुफा (मन्दिर)—दुन्च्यू से प्रथम गुफा १६ मील पर है। दुन्च्यू से प्रथम गुफा जो श्री कैलास पर्वत के ठीक पश्चिम में है। मैदानी राह तथा पूर्वोत्तर दिशा में पड़ता है। इस दिन की यात्रा अत्यन्त मोहक और आनन्दमयी होती है। तथा तीन बड़ी २ नदियां पार करनी पड़ती हैं। सायंकाल के समय पहिली गुफा जो श्री शंकर सदन श्री कैलास के पश्चिम दिशा में है, मैदान में दक्षिणवाही गंगा के किनारे डेरा पड़ता है। गंगा श्री कैलास पर्वत की परिखा स्वरूप है यह यहां पर तीनों नहीं पड़ती है उसके बाहर ही बाहर सुन्दर प्राकृतिक सड़क में होकर चलना पड़ता है। रात्रि को वहां निवास कर प्रातःकाल स्नान संध्या करके गुफा (मन्दिर) में भेंट पूजा देकर अपने पितरों के नाम पर दिये जलाये जाते हैं। जिस २ पितर के नाम दिया जलाये जाते हैं और जो जलाता है उनका नाम वहां का लामा अपने रजिस्टर में लिख लेता है। जो दिया जलाया जाता है उसको वे लोग प्रलय पर्यन्त जलते रहने की गारन्टी देते हैं। दिये की प्रथा यह है कि—यदि कोई बकरी चढ़ावे तो २॥) कोमत, कोई गाय चढ़ावे तो १०) जमा करने होते हैं। इन रुपयों की बकरी, तथा गाय खरीद कर मठ की

पशुशाला में शामिल कर दिये जाते हैं। उन्हें बेचने का धर्म नहीं होता है। अतः उनकी सन्तान व सन्तान के मक्खन से दिया जलता रहता है। गुफा तिब्बतीय भाषा में मन्दिर को कहते हैं। श्री कैलास की परिक्रमा में ४ गुफायें मिलती हैं। यह प्रथम गुफा है। ईंट और सिमेन्ट के मकान के ही सदृश इसकी भी बनावट है। इसमें हजारों आदमी वास कर सकते हैं। जब कार्तिक से वैशाख पर्यन्त सारी मही हिमाच्छन्न हो जाती है तब भी इन लोगों के इस गुफा के ही भीतर सभी कर्म जारी रहते हैं। यहां पर बुद्ध भगवान की मनोहर मूर्ति, हाथी के विशाल दांत, बड़े २ नक्कारे मनों घी समाने वाले अखण्ड ज्योति वाले दिये, पुस्तकालय तथा बड़ी २ बन्दूकें स्थूल दृश्य में दिखाई देते हैं। छोटे छोटे सैंकड़ों दीपक भी जलते रहते हैं। उसकी ज्योति श्री कैलास की ओर पूर्व मुखी होती है इसके अतिरिक्त नाना प्रकार की मूर्तियां तथा अन्य दर्शनीय वस्तु भी होती हैं। यहां एक आचार्य (लामा) होता है उसके आधीन बहुत से ब्रह्मचारी (डावा) लोग भी होते हैं वही उस गुफा के कर्मचारी भी होते हैं। मन्दिर की देख रेख, आमद खर्च की कमी बेशी सब लासा सरकार के मातहत होती है। यह लोग तीर्थ यात्रियों (नैकारा लोगों) को प्रेम की दृष्टि से देखते हैं और उनकी मदद भी करते हैं। चढ़ावा देने में तथा नवधा भक्ति में तिब्बतीय भारतीयों से कहीं ज्यादा बढ़े हुये श्रद्धालु होते हैं। ये लोग छाती के बल यात्रा करते हैं. धन सम्पत्ति के अलावा श्री कैलास की भेंट में सन्तान भी समर्पित करते हैं। कोई २ दांत तथा लटी उखाड़ कर शिवजी को भेंट चढ़ाते हैं। गुफा से रेशमी टुकड़ों की प्रसादी मिलती है। प्रातःकाल प्रथम गुफा से श्री कैलाश के दर्शन करने पर जो दृश्य दृष्टि-

गोचर होता है उसकी यथार्थ महिमा को वर्णन करने या बुद्धिगत करने के विचार उत्पन्न होते ही लय हो जाते हैं। स्मरण तथा धारणा-शक्ति निष्क्रिय होकर उसी प्रकाश में लय हो जाते हैं जो प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के उस गगन चुम्बी स्वच्छ स्फटिक पर्वत स्वरूप हिमाच्छन्न गुम्बजाकार पर्वत पर प्रतिबिम्बित होकर द्रष्टा की आँखों में चमचमाने लगता है। बड़े प्रयत्न से इतना ही याद होता है कि गुफा से २०० गज पूर्व तथा १०० गज नीचाई पर श्री कैलास पर्वत के पश्चिमी आसन स्वरूप पर्वत की मूलवर्ती सतह में दक्षिण की ओर स्वच्छ जल से पूर्ण नीलवर्ण वाली नदी बह रही है, उस नीलवर्ण नदी स्वरूप सरिता में श्री कैलास रूपी अक्षय वट की अंकुरमयी जटा रूप करीब २०० फीट ऊंचाई से बराबर जलधारायें गिर रही हैं और इस कपिश वर्ण के चट्टान रूप आसन में स्थापित करीब ५ हजार फीट ऊंचा नवनीत पिण्ड स्वरूप प्रकाश से चमकता हुआ नीले आकाश में शरद्पूर्णिमा की निशा का पूर्ण कला वाला लिङ्गाकार चन्द्रमा सा उदित हो रहा है। अथवा बाघम्बर आसन में समाधिस्थ चन्द्रशेखर शंकर भगवान के विभूति चढ़े हुये शरीर में विराजमान जटारूप स्वरगंगा की असंख्य धारों भूलोक को पवित्र करने के लिये अवतरित होरही है। इस अवर्णनीय छवि का इन साधनों से व्यक्त करना दुःसाहस है। 'श्री कैलास' पत्रिका में मानवीय बुद्धि से वर्णन करने का प्रयास किया जायेगा।

[२२] ज्यर्फू दूसरी गुफा पहिली गुफा से ६ मील दूरी पर एक दिन की राह पर है। पहिली गुफा की पश्चिमी पर्वत श्रेणी श्री कैलास से कुछ कम ऊँचाई की क्रमशः उत्तर

की ओर चली गई है। श्री कैलाश तथा इस पश्चिमी पर्वत श्रेणी के मध्य एक मील चौड़ी ४००० फीट गहरी अर्घाकार खाई है जिसका अर्घ भाग इसी आकार का श्री कैलास के पूर्व में पड़ता है। अर्घ के ठीक उत्तरी कोण स्वरूप श्री गौरी कुण्ड विराजमान है। श्री कैलास पर्वत इस खाई के बीच उसी प्रकार शोभित होते हैं जैसे अर्घ के बीच में श्वेत शालिग्राम स्थापित किया हो। इस शालिग्राम रूप पर्वत की सतह में अर्घाकार ही में नदियां भी बहती हैं। यही शिव-शक्ति का मौलिक आदर्श विदित होता है। इस शक्ति के पश्चिमी फाटक के आरम्भ में ही पहिली गुफा है जहां गत रात्रि में निवास किया था। अब इसी परिखा में गंगा के पश्चिमी किनारे २ 'डयफू गुफा' के लिये यात्रा आरम्भ होती है, करीब दो मील आगे बढ़ने पर पश्चिमी पहाड़ 'गणेश पर्वत' कहलाता है, पूर्व में गंगा पार श्री कैलास के आसन का पश्चिमी पर्वत जो सिमेन्ट का सा बना है 'काग भुशुन्डी पर्वत' कहलाता है। यह यात्री के दायें हाथ की ओर पड़ता है। २ मील और आगे बढ़ने पर यात्रियों को एक सहायक गंगा पार करनी पड़ती है जिसमें पुल बना रहता है। इस यात्रा में छाती के बल यात्रा करने वाले तिब्बतीय यात्री मिलते हैं जो श्री कैलास की परिक्रमा एक महीने में कर पाते हैं। गंगा के किनारे किनारे मैदान भूमि में चलते २ सायंकाल ५ बजे दूसरी गुफा में पहुँच जाता है। यह गुफा 'श्री कैलास' के ठीक वायव्य दिशा में तथा इस गुफा से 'श्री कैलास' आग्नेय दिशा में बिल्कुल समक्ष ही दीखते हैं। यहां से 'श्री कैलास' हूबहू शिवालय के रूप में दीख पड़ते हैं। यह छवि अलौकिक तथा अवर्णनीय है। गुफा का विधान पहिली गुफा की ही तरह है। यहां

से उस शिवालय के कमर में एक काली रेखा सी दीख पड़ती है जिसके विषय में यह गाथा है कि जब रावण अपनी तप तथा भक्ति की शक्ति से शंकर भगवान के भौतिक सदन इस श्री कैलाश पर्वत को नाग फांस से बांध कर भावना रूप से लंका में ही स्थापित करने के लिये लेगया था उस समय नाग फांस का ही यह चिह्न कहानी के रूप में पड़ा है। इस गुफा के पूर्ववर्ती मैदान में, जिसमें हरी हरी कोमल २ घास तथा छोटे २ पुष्पों के गलीचे से बिछे रहते हैं, सामने स्वच्छ गंगा दक्षिण को प्रवाहित होरही है, उसी के पश्चिमी तटपर 'आश्रम काफिले' का कैम्प लगता है। प्रत्येक यात्री शिव भजन करता हुआ मस्त होकर विहार तथा सायंकालीन सन्ध्या पूजा करता हुआ अलौकिक सुख में गोता लगाता है। भोजनोपरान्त शयन करता हुआ रात्रि व्यतीत कर प्रभात होते ही श्री गौरी कुण्ड तथा तीसरी गुफा की यात्रा का आरम्भ होने लगता है।

[२३] श्री गौरी कुण्ड—दूसरी गुफा से ४ मील अलमोड़ा शहर से २५० मील दूरी पर हिमाच्छन्न तालाब श्री कैलास के ठीक उत्तर में मिलता है।

दूसरी गुफा से चलते ही पुल में होकर वही गंगा पार कर पूर्व की ओर बढ़ना होता है जिसके किनारे २ पहिली गुफा से आ रहे हैं। यह चार मील शैली २ चढ़ाई है। करीब १० बजे ऊंचे ऊंचे स्थान पर सड़क के दाईं ओर श्री गौरी कुण्ड दीख पड़ता है। दर्शन होते ही ज्ञात पड़ता है कि नवनीत से परिपूर्ण बड़ी बड़ी रजत परात है। यह वही स्थान है जहां पर यात्रा का आखिरी चढ़ाव तथा जहां पर यात्रा का उत्तरमुख पूर्ण होकर अब उतरने के लिये दक्षिण मुख हो जाता है। यहां

पर पहुंचते ही स्नान की ही तैयारी होती है। जमे हुये बर्फ को पत्थरों से तोड़ २ कर गोता लगाते हुये 'गंगे हर हर', 'नमः पार्वती पतये हर हर' से आकाश गूंजने लगता है। पुनः वस्त्र बदलकर सन्ध्या पूजा चन्दन, रोरी का तिलक धारण कर, प्रत्येक यात्री अपने झोले से प्रसादी निकाल कर उस चद्दर में जमा कर देता है जिसमें सर्व प्रथम आश्रम का प्रसाद रखा जाता है फिर सबका प्रसाद मिलाकर बांटा जाता है और एक यात्री दूसरे यात्री के गले से मिलकर प्रेममय आंसू उगलते हुये नमस्कार करता है। इसका तात्पर्य यह बतलाया जाता है कि यहां पर एकत्रित यात्री पूर्व जन्म में सटुम्बी थे और भक्त और तपस्वी थे। उसी संस्कार से ऐसी भूमि ऐसे तीर्थ में पुनः एकत्रित हुये अन्यथा ऐसी भूमि में सहभोज सहवास, प्रसाद विनिमय का होना असम्भव है। अगले जन्म में भी हम लोग साथ ही भक्ति करेंगे। मैत्री भाव के अलावा शत्रु भाव हम लोगों में न आने पावे, नाना जन्म लेकर उमा शंकर की भक्ति करते रहे इत्यादि। इसके बाद श्री १०८ स्वामी जी महाराज को प्रत्येक यात्री अपने गुरु तथा पितृभाव से बार २ नमस्कार कर कृतज्ञता से गद्गद् कण्ठ होकर अश्रुधारा बहाता हुआ मूक होजाता है। श्री स्वामी जी महाराज भी वात्सल्यमय आंसू की बूंदें टपका कर आशीर्वाद देते हुये आगे को यात्रा आरम्भ करने का आदेश देते हैं।

[२४] तीसरी गुफा—करीब १२ बजे दिन में श्री गौरी कुण्ड से ॐ नमः शिवाय ॐ इस महामन्त्र का जप करते हुये हल्के और पुलकायमान शरीर को लेकर कृतकृत्य यात्री श्री गौरी कुण्ड से तीसरी गुफा के लिये उतरने लग जाते हैं।

यह स्थान श्री गौरी कुण्ड से करीब ५ मील पर है। श्री कैलास की पूर्वी परिखा बनाने वाली नदी बायें हाथ की ओर पड़ती है उसी के साथ २ दाईं ओर यात्री भी मैदानी भूमि में उतरते आते हैं। करीब ढाई बजे तीसरी गुफा मिल जाती है। दर्शन करके जरा देर विश्राम करके करीब ५ मील दूरी पर दरचोन मण्डी के लिये प्रस्थित होजाते हैं, ५ बजे यहां पहुंच जाते हैं।

[२५] दरचोन मण्डी—यह स्थान 'श्री कैलास' के ठीक दक्षिण दिशा में है। यहां पर श्री कैलास पर्वत से उसी का आसन स्वरूप पहाड़ शनैः शनैः तिब्बतीय मैदान की सतह में लय हो जाता है। यहां पर 'लासा' के राजा (लामा) की ओर से एक सामन्त राजा का किला है। उस राजा को 'रहोबा' कहते हैं। जगह गर्म है। यहां पर जो मठ का छोटा सा बगीचा है। जोहारी तथा तिब्बतीय व्यापारियों की बहुसंख्यक दुकानें लगी रहती हैं, तम्बू ही तम्बू नजर आते हैं। हजारों की तादाद में तिब्बतीय बकरी, चंवर, घोड़े दिखाई देते हैं। यहां भारत के भोजनाच्छादन सम्बन्धी सभी पदार्थ मिलते हैं। कीमत चौगुनी होती है। इसी प्रकार नमक, सोहागा, ऊनी वस्त्र, ऊन, बकड़ी घोड़े वगैरह तिब्बतीय व्यापारी सामान भी विद्यमान रहता है। इस मण्डी को गवर्नर जोहारी तथा तिब्बतीय व्यापारियों से टैक्स लेता है। तिब्बत सरकार की तरफ से एक बड़ा आफीसर इन मण्डियों में घूमता है। उसको 'गड़पण' कहते हैं। उसकी शक्ति कमिश्नर के बराबर होती है। उसके अधीन छाम्यू रहता है जिसके हाथ में कलक्टर के करीब शक्ति होती है। इनके पास राईफल, रिवोल्वर धारण किये हुये पुलिस भी रहती है।

यहां किसी भी जुर्म के लिये फांसी का दण्ड नहीं दिया जाता है। जुर्माना और बेंत यही यहां की सजा होती है। व्यापारी लोग भी सरकार से त्रिवर्षीय तथा दशवर्षीय ठेका लेकर यहां व्यापार करते हैं। सबसे बड़े व्यापारी को 'जिङ्ग्छुङ' कहते हैं। इसको व्यापार विभाग में गवर्नर के बराबर शक्ति होती है। इनसे जोहारी तथा दार्जिलङ्गी वगैरह व्यापारियों से सौदा खरीद कर तिब्बतीय प्रजा के ऊपर जबर्दस्ती भी मनमानी क़ीमत पर पटका जाता है। इस प्रथा को 'पुगेर' कहते हैं। इन सरकारी आफीसरों की सेवा में यहां की प्रजा को बहुत बेगारियां भी बलात् देनी पड़ती हैं। यहां की प्रजा की सम्पत्ति पशु ही हैं। उन्हें चुगाने के लिये भूमि बांटी जाती है। राजा उसी का कर लेता है। शिक्षा प्रचार, औद्योगिक उन्नति वगैरह का सरकारी इन्तजाम कुछ भी नहीं है। भारतीय सरकार की ओर से भी एक एजेन्ट रहता है जो 'वाइसराय कमीशन' की सर्विस करता है। यहां के लोग धार्मिक आस्था पर अत्यन्त दृढ़ रहते हैं। प्रत्येक घर में ध्वजा पताका फहराती है तथा डमरू, त्रिशूल प्रत्येक घर की शोभा होती है। एक बौद्धमूर्ति तथा माला सभी व्यक्तियों के पास रहती है। यह लोग पक्के हथियारी होते हैं। तलवार, बन्दूक यहां का भूषण है। कपड़े, रेशम, मखमल, बनात, कारचाई तथा ऊनी पहिनते हैं। शौच, स्नान, वस्त्र धोना इनके यहां जानते भी नहीं हैं। मनुष्य को छोड़कर सभी जानवरों को खाते हैं। यहां का मुख्य भोजन सत्तू, शिकार, नमकीन चाय तथा दूध, घी, छांस यही है। यहां बाप की जायदाद में लड़की भी हिस्सेदार होती है। जोहार वालों के यहां इनकी ऐसी मैत्री रहती है कि प्रलय पर्यन्त हमारी सन्तानें दूसरे से व्यापार नहीं करेंगी, निभाते भी हैं। जोहारी लोग अपने

मिश्र को १०, १५ हजार में बेचते हैं। मरने पर यह लोग शव को ग्रन्थ के लेख के अनुसार किसी को काट के दिशाओं में फेंक देते हैं किसी को गाड़ देते हैं, किसी को छोड़ भी देते हैं। दरचीन में ये सब बातें पूछने पर जानी जा सकती हैं।

[२६] चौथी गुफा (ग्याङ्टाङ)—दरचीन से १॥ मील पर यह गुफा कैलास पर्वत में उत्तर की ओर चढ़ने पर मिलती है। यहां भी लामा वगैरह का प्रबन्ध अन्य गुफाओं की भांति ही है। इस गुफा के दर्शन करके शाम को पुनः दरचीन मण्डी में आया जाता है। दरचीन से अब मानःसरोवर की यात्रा का आरम्भ होता है।

[२७] मानःसरोवर—दरचीन से १० मील दूरी पर मानःसरोवर के किनारे 'ज्यू गुफा' मिलती है यहां से राक्षस तालाब में नहर के रूप में पानी जाता है। दरचीन से करीब ६ मील का एक मैदान पार करना पड़ता है। इस मैदान में 'श्यामकर्ण' घोड़ों के झुण्ड के झुण्ड मिलते हैं जो लाल वर्ण के अरबी घोड़ों के बराबर होते हैं। इनकी कमर में जीन का सा चिह्न दिखाई देता है। ये मनुष्य को देखकर वायु वेग से भग जाते हैं। इनकी दौड़ की रफ्तार ८० मील प्रति घण्टा जान पड़ती है। यहां से कुछ दक्षिण की ओर मुड़कर कुछ उठे हुये पठार पर चढ़ना पड़ता है। यात्री के ठीक पीठ की ओर श्री कैलास तथा पाण्डवों की वेदी, जिसमें पाण्डवों के हवन के शेष कोयले भी मिलते हैं जो श्री कैलास से मिला हुआ कुछ ही नीचा तीन वप्र वाली वेदी के रूप में हैं, दिखाई देते हैं। दायें हाथ की ओर राक्षस तालाब जो भयानक और

काला है और करीब ३५ मील लम्बा तथा २५ मील चौड़ा है, करीब ही नजर आता है इसी प्रकार बाईं ओर मान.सरोवर करीब ४० मील लम्बा चौड़ा कमलाकार ऊंचे पठारों के बीच में दृष्टिगोचर होता है। यात्री को मानःसरोवर के दक्षिण पश्चिमी तट पर स्थित गुफा में जाना होता है। सम्मुख, इस जगह से करीब २० मील दूरी पर ठीक पूर्व में मानधाता का विशाल पर्वत है जो श्री कैलास से उचाई तथा लम्बाई चौड़ाई में बहुत बड़ा है और अकेला ही है, पड़ता है। यह सारी यात्रा में निराली शान का पर्वत है। ऐसा भासता है सूर्यास्त होने पर भी सुमेरु की भांति इसकी चोटी पर भी रात्रि में सूर्यकिरणें पड़ती ही होंगी। इसकी ऊंचाई २८००० फीट से कम नहीं होगी। ऐसे सर्वव्यापी दृश्यों को दिखाने वाला स्थान मान:सरोवर से ४ मील पीछे ही पड़ता है। यहां से क्रमशः उतर कर सरोवर के किनारे बांयी गुफा में पहुँचा जाता है। सूर्य भगवान भी अपनी किरण सम्पत्ति को बटोर कर अस्ताचल में छिपने लग जाते हैं। इस बेला में तिब्बतीय मैदानों की अमेय सीमाओं की परिधि में विराजमान हिमाच्छन्न पर्वत श्रेणियां जिनमें अरुण किरणें प्रतिबिम्बित होकर भी प्रभा से सारे तिब्बतीय मैदानों, नदियों सरोवरों को बलात् सुवर्णमय बना देते हैं जिसको देखकर मोहान्धकार में भ्रमित जीव को भी वैराग्य तथा उस परमात्मा की विभूतिमयी शक्ति पर श्रद्धा तथा आश्चर्य होने लगता है तथा स्वभावतः आस्तिकता का भी अनुभव होने लग जाता है। सायंकाल ५ बजे के करीब गुफा के पास पहुँचा जाता है। सर्व प्रथम श्री मानःसरोवर में आने वाली लहरों की गुञ्जायमान ध्वनि कानों में पड़ती है। वह गम्भीर ध्वनि कानों में पहुंचते ही मन को बेचैनी हो जाती है वह आँखों

को भी उस आश्चर्य को देखने में लगाकर स्वयं भी उन्हीं में आरूढ़ होकर एक के बाद एक पहुँचने वाली तरंगों में हिलोरें लेने लग जाता है। उन तरंगमयी झूलनी में झूलने वाले श्वेत हंसों के समुदाय तो बिखरे हुये मन को ही चुगने लग जाते हैं। मछलियां उन लहरों में विहार करती हुई कभी २ निर्जल तटों में सदा के ही लिये सो जाती हैं। दर्शक अपनी सुध भूलकर तसवीर की सी फोटो बन जाता है। वह स्वच्छ नील स्वादिष्ट जल अपनी ओर बलात् जैसे खींच लेता है। उसी मुग्धता में पञ्चस्नान मार्जन तथा सन्ध्या भी होने लग जाते हैं। अतः इन दृश्यों से चिरपरिचित यात्री उन मनमुग्ध नव यात्रियों को गुफा में बुलाकर भोजन शयन के लिये कार्यान्वित कराते हैं। प्रातःकाल दिशाओं के साथ २ आँखें भी पुनः सरोवर तथा तद्गत जीवों को देखने की उत्सुकता से खुल बैठती हैं। नित्य-कर्म के बाद मुण्डन श्राद्ध करके गुफा में पहिली गुफा की भांति भेंट पूजा की जाती है। यह मानःसरोवर शास्त्रोक्त देवताओं का विहार स्थल तथा देव दानव युद्ध का क्षीर सागर है इसके शास्त्र तथा पुराणों के अनुसार वर्णित सभी बातें अक्षरशः सत्य हैं। यहां अब भी देव योनियां, सिद्ध यक्ष, गन्धर्व, किन्नर लोग दीख पड़ते हैं। यह समष्टि गत हिरण्यगर्भ का मधुरा मानःसरोवर है। जम्बू द्वीप की चारों दिशाओं में नदियों के वितरण करने से यह भूलोक रूप शरीर का भी हृदय साबित होता है। यहां से पूर्व की ओर ब्रह्मपुत्र तथा पश्चिम की ओर सतलज बहता है। इस भूमि का विशद वर्णन 'श्री कैलास पथिका' में दिया जायेगा।

[२८] ठोकर गुफा—इस 'ज्यू गुफा' से करीब १६ माल दूरी पर ठोकर गुफा है। रास्ता, मैदान और सरोवर के

किनारे २ जाता है। यह स्थान मानधोता के मूल में है। यहां पर व्यापारो मण्डी है। सरोवर के किनारे के दृश्य पूर्ववत् हैं। गुफा के भो दस्तूर पूर्ववत् हैं।

[२६] गौरी गुफा—ठोकर गुफा से १४ मील दूरी पर जंगली पड़ाव है। यह मानधाता से दक्षिणवाही नदी के किनारे पर है।

[३०] ताकला कोट—गौरी गुफा से ताकलाकोट १५ मील दूरी पर भारत तथा तिब्बत की व्यापारी मण्डी है। इस दिन की यात्रा में तिब्बतियों के गांव और मटर की खेती मिलती है। यहां पर 'लासा' सरकार का गवर्नर रहता है। बुद्ध भगवान् की मनोहर मूर्ति तथा मन्दिर है। यह दो नदियों के सङ्गम पर मनोहर मण्डो है।

[३१] खोचरनाथ—ताकला कोट से १० मील दूरी पर प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। ताकला कोट से सुबह ही जाने पर यहां भारतीय कला से पूर्ण अनुपम सिंहासनों के ऊपर पञ्चधातु की बनी हुई श्रीराम, लक्ष्मण, सीता जी की मूर्तियां हैं। यह भारत भर में उत्तम कोटि का देवालय है। दर्शन करके शाम को 'ताकला कोट' पहुंचा जाता है।

[३२] काला पानी—ताकलाकोट से कालापानी १६ मील दूरी पर है। 'लिपूलेक' दर्रे को लांघ कर यहां पर पहुंचा जाता है। यहां पर धर्मशाला है। यहां पर पहुंचने पर तिब्बत की राज्य सीमा की यात्रा पूरी होकर लौटते हुये पुनः भारत सीमा के भीतर पहुंचा जाता है। यहां आकर तिब्बतीय भूमि के वीरान दृश्यों के बजाय हरे भरे पर्वत तथा

गर्म जलवायु, भारतीय रहन सहन वाले गांव मिलने लग जाते हैं। यहां से काली नदी निकलती है।

[३३] गर्व्यांग—कालापानी से ६ मील दूरी पर है। यहां व्यांस भोटियों की बसासत है। यहां भारतीय शासन के डांकखाने, स्कूल आदि प्रबन्ध मिल जाते हैं।

[३४] मालया—गर्व्यांग से 'मालया' १२ मील दूरी पर है। यह याद रहे यात्री दक्षिण की ओर आरहा है। रास्ता उतार है। दृश्य कुमाऊ पर्वतीय भागों की ही तरह है।

[३५] जिवती—मालया से ६ मील यहां पर एक दुकान है।

[३६] सिर्खा—जिवती से १० मील दूरी पर है। यह रास्ता चढ़ाई का है। यहां पर व्यासी भोटियों की बसासत है।

[३७] श्री सत्यनारायण स्वामी जी का आश्रम—सिर्खा से ३ मील पर 'शोसा' गांव से आम सड़क छोड़ कर बांई ओर जंगल में १॥ मील पर यह उत्तम आश्रम बना है। यहां पर बड़े २ सेठ लोग आकर विहार करते हैं। स्वामी जी ने बड़ी २ बिल्डिगें तैयार की हैं।

[३८] खेला—खिर्खा से १० मील दूरी पर काली तथा धौली नदी के बीच में व्यास और दारमा की सड़कों के मिलान पर क्षत्रियों का गांव है। यहां पर दुकान, धर्मशाला तथा इस आश्रम का मन्दिर है। यहां डाकखाना तथा स्कूल भी हैं।

[३९] धारचूला—खेला से धारचूला काली के किनारे २ उतरना होता है। यह बाजार तथा कुमाऊं और नैपाल की मण्डी है।

[४०] जौलजीवी—यह काली तथा गोरी के संगम पर व्यापारी मंडी है, बहुत गर्म जगह है।

[४१] डीडीहाट—जौलजीवी से चढ़ाई तथा मैदान एक दिन की यात्रा है। बीच में अस्कोट स्टेट भी मिलती है। सुन्दर गांव है।

[४२] थल—डीडी हाट से आधे दिन का मैदान और उतार का रास्ता है। यहां पर बाजार, रामगंगा, मन्दिर तथा पुल विशेष दर्शनीय हैं।

[४३] बेनीनाग—थल से एक दिन का रास्ता है। यह बड़ी मनोहर जगह है, बाजार, पोस्ट आफिस टी स्टेट डाक बंगला सभी साधन हैं। यहां से नजदीक में भी हाट कालिका जी का दर्शनीय मन्दिर है।

[४४] बागीश्वर—बेनी नाग से एक दिन का रास्ता है।

[४५] यहां से गरुड़ मोटर स्टेशन १२ मील, अलमोड़ा शहर २७ मील दूरी पर है। इस प्रकार आश्रम गरुड़ से अपने इन्तजाम में लिये हुये यात्रियों को पुनः अपने ही इन्तजाम में यहां तक पहुँचा देता है। इस यात्रा का नकशा भी इसमें दिया जाता है।

ॐ सर्वेकुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॐ

श्रीमत् प्रातः स्मरणीय १०८ श्री स्वामी जी महाराज
श्री विद्यानन्द सरस्वती जी बी० ए० वेदान्ताचार्य
के चरण-कमलों में सप्रेम सविनय समर्पित की
जाती है तथा भक्त-मण्डली को शुभ
सूचना रूप में भेंट की
जाती है।

हरिः ॐ तत्सत्

ॐ नमः शिवायै च नमः शिवाय ॐ

समर्पकः—
पं० लीलाधर शास्त्री 'आङ्गिरस'
सेक्रेटरी,
श्री गीता सत्सङ्गाश्रम,
श्री कैलास द्वार पा० मुन्स्यारी
हिमालय अल्मोड़ा।

श्री शुभ मिती फाल्गुन
बदी ११ रविवार
ता० १६-२-४७

हरिः ॐ तत्सत् ॐ

श्री गीता सत्सङ्गाश्रम

कैलास-द्वार मुन्स्यारी पो० हिमालयाज,

अल्मोड़ा

की

नियमावली

१ जुलाई सन १९४६

हरिः ॐ तत्सत् ॐ

श्री गीता सत्सङ्गाश्रम
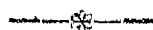
श्री कैलास-द्वार पो० मुन्स्यारी हिमालयाज

जि० अल्मोड़ा

ॐ मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुड़ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः॥

ॐ सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः।
शोणा धरं महः किञ्चिद्वीणाधरमुपास्महे॥

ॐ ब्रह्म विद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्य आचार्येभ्यो नमः॥

हरिः ॐ तत्सत् ॐ

संस्थापकाः सञ्चालकाश्च
श्रीमन्तः प्रातःस्मरणीयाः श्री परमहंस परिव्राजकाचार्याः
श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द सरस्वती महानुभावाः॥

नियमावली

१—आश्रम के उद्देश्य :—

[१] श्री गीता धर्म प्रचार। [२] शिक्षा प्रचार। [३] पौरोहित्य विधान। [४] गृह त्यागियों का विधान। [५] कैलाश यात्रा व्यवस्था।

२—नियमावली :—

"आश्रम के सदस्य" वे ही व्यक्ति हो सकेंगे जो हिन्दू हों और जिनकी उम्र पुरुष हो तो कम से कम २० वर्ष, स्त्री हो तो २५ वर्ष हो। जिन्हें किसी बुरे आचरण के लिये कारावास न हुआ हो और जिनकी बुद्धि स्वस्थ हो।

३—सदस्यता की समाप्ति :—

[अ] जब सदस्य का देहान्त हो जाय। [ब] जब कोई सदस्य आश्रम के विरुद्ध कार्यवाही करें या करवायें अथवा जब दो साल तक सहायता बन्द कर दें। [स] जब किसी सदस्य को बुरे कर्मों के लिये सजा हो जाय।

४—मेम्बर और उनके अधिकार :—

प्रथम श्रेणी में उन मेम्बरों का नाम होगा जो आजीवन आश्रम के मेम्बर होंगे। सालाना १००) रु० आश्रम सहायतार्थ प्रदान करेंगे।

अथवा 'व' आश्रम में रहकर साधना करते हुए आश्रम की सेवा करेंगे।

मेम्बर 'अ' श्री कैलास यात्रा आश्रम पार्टी के साथ अपने खर्चे से कर सकते हैं। और हर साल एक माह आश्रम में रहकर साधना कर सकते हैं।

(उप नियमावली के अनुसार)

द्वितीय श्रेणी के मेम्बर वे ही व्यक्ति हो सकते हैं जो आजीवन आश्रम के मेम्बर होंगे। तथा सालाना ५०) रु० आश्रम को सेवा में प्रदान करेंगे। इस श्रेणी के मेम्बर आश्रम के एक स्वयं सेवक को मांग कर अपने खर्चे से श्री कैलास यात्रा कर सकते हैं। आश्रम में अपने खर्च से साधना करते हुए १५ दिन रह सकते हैं। उपनियमावली का पालन करना होगा।

तृतीय श्रेणी के मेम्बर वे ही व्यक्ति होंगे जो आजीवन आश्रम के सदस्य होंगे। और सालाना आश्रम को २५) रु० सालाना की सहायता प्रदान करेंगे। इस तृतीय श्रेणी के मेम्बरों को एक द्विभाषिया मिलेगा। सभी खर्चे उन्हीं को उठाने होंगे। इस श्रेणी के मेम्बर सिर्फ दुर्गा पूजा के समय १० दिन साधना सहित रह सकते हैं।

नोट—श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द जी के शिष्यों पर ये नियम लागू नहीं होंगे। उनकी आज्ञा के अनुसार शिष्यों के नियम होंगे।

५—इस संस्था के आय के जरिये :—

(१) मेम्बरों से चन्दा। (२) धार्मिक लोगों से चन्दा।

६—आश्रम की जो भी आमदनी होगी वह आश्रम के उद्देश्य से निम्नलिखित रीतियों से खर्च होगी :—

२५%श्री कैलाश यात्री संत महात्मा आदियों के निमित्त।
५०% आश्रम के निमित्त।
१०% श्री गीता धर्म प्रचार के निमित्त।
१०% शिक्षा प्रचार के निमित्त।
५% इन्तजाम के निमित।

७—इस संस्था के संचालन के लिये १० सदस्यों की एक कमेटी होगी जिसमें ५ सदस्य आश्रम निवासी होंगे जो डाइरेक्टर और वाह्य ५ सदस्य ट्रस्टी लोगों की वोट से चुने जायेंगे। वाह्य ५ सदस्य ट्रस्टी लोगों की वोट से चुने जायेंगे। ट्रस्टीज प्रत्येक शहर में वहाँ के सदस्यों की वोट से एक होगा।

८—यह ट्रस्टीज बोर्ड आश्रम की ठीक व्यवस्था के लिये धन एकत्रित करने के लिये और एकत्रित धन को व्यय करने के लिये जिम्मेवार रहेगी। उपनियम भी बनाती रहेगी।

९—इस बोर्ड के "ट्रस्टी सदस्य" के श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द सरस्वती बी० ए० वेदान्ताचार्य जी डाइरेक्टर रहेंगे। एक मंत्री और एक उपमंत्री भी अवश्य रहेंगे जो आश्रम में रहकर जिम्मेवारी के साथ कार्य करेंगे। मंत्री की गिनती १० मेम्बरों के भीतर ही रहेगी।

१०—इस बोर्ड की दो बैठकें एक वर्ष में अवश्य होंगी एक बैठक जनवरी में हल्द्वानी में और एक बैठक जून में

मुख्तयारी में। स्थान परिवर्तन डाइरेक्टर व मंत्री कर सकते हैं।

११—बाह्य ५ सदस्यों में या ट्रस्टीज में से एक आदमी ओडीटर रहेगा जिसका कर्तव्य साल में एक बार आश्रम का पूरा हिसाब लेना होगा।

१२- यदि कोई धर्मशाला, गौशाला, पाठशाला, मन्दिर, अनाथालय, पुस्तकालय और विधवाश्रम के लिये धन दे तो वह दाता की इच्छानुसार ही व्यय किया जायगा। केवल उसका छठा भाग उसकी रक्षा के लिये जमा रक्खा जायगा।

१३—कुल ट्रस्टीज लोगों की एक जनरल बैठक हर तीसरे वर्ष निर्दिष्ट स्थान में हुआ करेगी।

उपनियमावली प्रथम खण्ड (अ)

१—इस आश्रम की शाखायें सब जगह खुल सकती हैं किन्तु जिस स्थान में भी खुले वहां कम से कम २५ सदस्य पहले ही अवश्य होने चाहिये। जमीन मुफ्त मिले। वहां पर गीता धर्म प्रचार, शिक्षा प्रचार इत्यादि आश्रम के उद्देश्य कार्यरूप में अवश्य परिणत करने होंगे।

२—शाखा आश्रम के मेम्बरों की स्थिति देख कर वहां की फीस आधी की जासकती है। उस शाखाश्रम के इलाके में वहां के ट्रस्टीज लोगों की एक सुव्यवस्थित कमेटी होगी, जो हेड ऑफिस की आज्ञानुसार काम करती रहेगी।

३—शाखाश्रम अपनी तहसील से बाहर सदस्य नहीं बना सकती है। अपनी आय का ५ प्रतिशत हेड ऑफिस में जमा

करेगी। हेड ऑफिस पण्डित, पुरोहित आदि शिक्षकों का प्रबन्ध करेगा और हर हालत में शाखाश्रमों को पुष्ट करने का प्रयत्न करेगा।

मुख्य आश्रम कैलाश-द्वार मुनस्यारी की उप-नियमावली प्र० खण्ड (अ)

१—आश्रम में स्थायीरूप से रहने वाले और नियमावली नं० ४ के प्र० ब के सदस्यों के नियम:—

आश्रम से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों को 'नौकर' तथा छात्र से मन्त्री, डाइरेक्टर तक, किसी को भी मादक (बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, चरस, अफीम, गांजा तथा मदिरा, मांस, मछली, प्याज, लहसुन आदि) पदार्थों का सेवन नहीं करना होगा। आश्रम की दिनचर्या का आद्योपान्त पालन करना होगा।

३—आश्रम में पहुँचने वाले सदस्य तथा अन्य व्यक्तियों को आश्रम में पहुँचने के एक हफ्ता पहले ही आश्रम मन्त्री को सूचना देनी होगी।

४—आश्रमवासी स्थायी सदस्यों को केवल जाड़ों में दो माह की छुट्टी मिलेगी। इसमें भी दो विभाग रहेंगे। एक एक विभाग करके एक एक साल छुट्टी दी जायेगी।

५—अवकाश के समय में आश्रमवासियों को आश्रमा-गर्दी के रूप में और आश्रम के नाम पर कहीं से भी उपहार रूप में कोई चीज लेना मना होगा।

६—आश्रमवासियों को निम्नलिखित कामों में से अपनी योग्यता और इच्छानुसार २ घंटा रोजाना कोई न कोई काम अवश्य करना होगा।

(अ) आश्रम सम्बन्धी लेखा पढ़ी।

(ब) कताई बुनाई।

(स) बगीचे का काम।

(द) बच्चों को पढ़ाना।

(य) गो-सेवा करना।

(फ) आश्रम का भोजन बनाना आदि अंतरंग कार्य।

७—आश्रम के सदस्यगण, डाइरेक्टर तथा मन्त्री की आज्ञानुसार कैलाश-यात्रा जा सकते हैं।

८—आश्रमवासियों का ध्येय होगा कि कांग्रेस के ध्येयों को मानें परन्तु राजनैतिक पहलुओं में बाहर जाकर भाग नहीं ले सकते। आश्रम में ही कांग्रेस के उत्सव मनाये जायेंगे।

९—आश्रम में आश्रमवासियों और सदस्यों के अतिरिक्त लोग एक रात्रि से अधिक नहीं रह सकते। इन बातों का अधिकार डाइरेक्टर महोदय को होगा।

१०—आश्रम में साधना के लिये ज्यादा दिनों तक रहने वाले सदस्यों को अपने खर्च से कमरा बनाना होगा। उस कमरे का सर्वाधिकार आश्रम को होगा।

११—आश्रम के सदस्यों को भर्ती करने का अधिकार डाइरेक्टर और मन्त्री को होगा। भर्ती कराने की सिफारिश अन्य सदस्य भी कर सकते हैं। प्रथम एक वर्ष अस्थायी

रूप से ही रखना होगा। पुनः चाल चलन व आश्रम का हित चिन्तन देखकर स्थायी सदस्य बना दिया जायगा।

१२—आश्रम के उत्सवादिकों का विधान :—

(१) आश्विन नवरात्रि उत्सव :—१० दिन तक अखण्ड कीर्तन, श्रीमद्भागवत कथा तथा अन्य प्रकार की पूजा और एकादशी को यज्ञ भंडारा अवश्य होगा।

(२) प्रत्येक पूर्णमासी को सत्यनारायण व्रत, कथा, कीर्तन अवश्य होगा।

(३) प्रत्येक अमावास्या को व्रत व रामायण अखण्ड पाठ अवश्य होगा।

(४) प्रत्येक सोमवार को कीर्तन व श्रीमद्भागवत, श्री मद्भगवद्गीता सत्संग अवश्य होगा।

(५) प्रतिदिन पूजा, वेदपाठ, हवन आदि रावल को अवश्य करना होगा तथा नित्य वेद पढ़ाना होगा।

१३—आश्रम दिनचर्या :—प्रातः ४ बजे से ५॥ बजे तक प्रातः स्मरण, शौच, दन्तधावन, स्नान, चन्दन धारणा आदि। ५॥ बजे से ७ बजे तक जपादि। ७ बजे से ६ बजे तक पूजा स्वाध्यायादि। ६ बजे से १०॥ बजे तक आश्रम का रचनात्मक कार्य। १०॥ बजे से ११॥ बजे तक मध्याह्न, सन्ध्या वगैरह। ११॥ बजे से १२॥ बजे तक भोजन व विश्राम। १२॥ बजे से ३ बजे तक रचनात्मक कार्य। ३ बजे से ४॥ बजे तक अध्यात्म चर्चा (प्रस्थान त्रयी द्वारा)। ४॥ बजे से

५॥ बजे तक भ्रमणादि। ५॥ से ६॥ तक सायं सन्ध्या स्तोत्रादि। ६॥ बजे से ८ बजे तक आरती कीर्तनादि। ८ बजे से ९ बजे तक फलाहार। ९ बजे से १०॥ बजे तक अध्ययन। १०॥ बजे से ४ बजे तक सोना।

नोट—ये नियम सामान्य रूप से हैं। व्यक्ति विशेष कर्त्तव्य का अलग विधान होगा।

उप-नियमावली प्र० खण्ड [ब]

१—मंत्री का कर्त्तव्य :—आश्रम के सभी अवयवों की पूरी जांच रखना। सभी कामों को अबाध्य रूप से चलाना। सबके साथ प्रेम का अनुशासन रखना। कोष तथा कर्मचारियों को सुव्यवस्थित रखना।

२—आश्रम पुरोहित का कर्त्तव्य तथा व्यवस्था :—पुरोहित को आश्रम के नियमों का पालन करने वाला ब्राह्मण होना चाहिये तथा छुआछूत खानपान के झगड़ों को नहीं मानना चाहिये। उसकी ड्यूटी श्री कैलास यात्रा पार्टी के साथ जाना अवश्य होगा तथा आश्रम के लिये सामान जुटाना और आश्रम का हित करना अवश्य होगा।

३—आश्रम रावल का कर्त्तव्य व विधान :—

(अ) रावल को आश्रम के सभी नियमों का पालन करना होगा। रावल दक्षिणमार्गी ब्राह्मण हो जो वेद वेदान्त निष्णात्, सदाचारी, सरल, परोपकारी और अभिमान रहित हो।

(ब) रावल ब्रह्मचारी ही होगा।

(स) मन्दिर में पूजा वेद-पाठ, वेदाध्ययन अपने कर्म-क्षेत्र की पूरी कर्त्तव्यता का पालन करना होगा।

(द) आश्रम के स्थायी मेम्बर के रूप में रहना होगा और चाहने पर सालाना दो माह की छुट्टी मिलेगी। अपनी भाषा व संस्कृत भाषा के अलावा हिन्दी व अंग्रेजी का जानकार हो।

अनाथ बच्चों की व्यवस्था :—आश्रम में ८ वर्ष से २२ वर्ष की उम्र वाले बच्चे स्थायी सदस्य के रूप में भर्ती किये जायेंगे। आश्रम के सभी नियमों का पालन करते हुये घर से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रखना होगा। अध्ययन के अलावा ३ घंटा आश्रम का रचनात्मक कार्य्य करना होगा। ३ वर्ष से १० वर्ष तक आश्रम में रहने की अवधि होगी।

५—महिलायें वहीं भर्ती की जावेंगी जो ४० वर्ष से अधिक उम्र की हों। और पूर्ण विरक्त हों परन्तु उनकी भर्ती तभी होगी जब इनकी संख्या कम से कम १० हो जाय। आश्रम से अलग एक महिलाश्रम बनाया जायगा। आश्रम के सभी नियम महिलाश्रम में भी लागू होंगे।

६—आश्रम के स्थायी सदस्यों की जीवन व्यवस्था :—

(अ) डाइरेक्टर, मंत्री, रावल, स्थायी सदस्य, अनाथ बच्चे और महिलायें इनको सम भाव से निवास भोजन व वस्त्र आश्रम की ओर से मिलेगा।

(ब) वस्त्र व्यवस्था—प्रत्येक वर्ष धोती २ जोड़ा, कुर्ते ४, टोपी २, लंगोटे ४, चद्दर २ (सूती), ऊनी स्वीटर १

टोपी १, गरम कोट १, दन १, थुलमा १, पंखी १
छाला २, टाट या दरी १

नोट—ऊनी वस्त्र हर पांचवें वर्ष बदले जायेंगे। पुरोहित को नवरात्रि में केवल १ जोड़ा धोती मिलेगा। पुरोहित आवश्यकता के अलावा आश्रम में नहीं रह सकता है।

७—आश्रम-सेवक-विधान :—कार्य्य-दक्षता के अनुसार आश्रम सेवकों को केवल वेतन मिलेगा।

८—डाइरेक्टर, मंत्री, रावल और पुरोहित को आवश्यकता और योग्यतानुसार आश्रम की शक्ति के अनुसार प्रतिवर्ष सम्मानित द्रव्य दिया जायेगा।

उपनियमावली प्र० खण्ड (स)

रचनात्मक-कार्य

१—प्रेस-विभाग :—

(अ) इस विभाग में धर्म-प्रचार व शिक्षा-प्रचार के लिये पुस्तकों को छापना, एक पत्रिका "श्री कैलास" नाम की निकालना जिसमें श्री कैलास यात्रियों के सहायतार्थ कैलास-यात्रा का विवरण और यात्रियों के उद्‌गार प्रकाशित किये जायेंगे।

(ब) इस प्रेस का काम या तो हेड औफिस मुन्स्यारी में या इसके ब्रांचेज कपकाट वगैरहों में खोला जायेगा।

(स) इस प्रेस का काम विजिनेस रूप में न होकर सामान्य मूल्य पर पुस्तक वगैरहों का वितरण करना होगा।

(इ) इस प्रेस का एडीटर या तो डाइरेक्टर रहेंगे या उनसे नियुक्त व्यक्ति।

२—ऊनी व सूती कारोबार:—सभी आश्रमों में आश्रम की जरूरतें पूर्ण करने के लिये यह कार्य किया जावेगा। इसके अतिरिक्त आश्रम-ट्रस्टीज को हर तीसरे वर्ष एक २ वस्त्र अर्पण किया जावेगा। व्यापार करना इसका ध्येय न होगा।

३—गौशाला:—प्रत्येक आश्रम में एक गौशाला होगी, जिसका उद्देश्य आश्रमों की पूर्ति करना ही होगा न कि व्यापार।

४—प्रत्येक आश्रम में एक बगीचा होगा, जिसका उद्देश्य आश्रम के लिये फूल, फल, साग, सब्जी का उत्पादन करना होगा जिसमें अन्न नहीं बोया जावेगा।

५—आश्रम की पूर्ति के लिये कागज तेल इत्यादि साइन्स के कार्य भी समयानुसार चालू किये जावेंगे।

उपनियमावली दूसरा खण्ड

१—श्री गीता-धर्म-प्रचार:—

(अ) श्री गीता-सत्संग-आश्रम श्री कैलास द्वार मुनस्यारी हिमालयाज के शाखाश्रम अपनी तहसील के प्रत्येक गांव में अपने आश्रम के १२॥), २५), ५०), १००) इस क्रम से वित्तानुसार सदस्य बनावेंगे। प्रत्येक शाखाश्रम के सभी नियम प्रायः मुख्याश्रम के ही अनुसार होंगे।

(ब) प्रत्येक शाखाश्रम में एक मन्दिर, धर्मशाला, आश्रम भवन, कीर्तन भवन, गौशाला, पुस्तकालय, बगीचा और रचनात्मक कार्य अवश्य होगा। ट्रस्टियों की एक कमेटी उसमें डाइरेक्टर, मंत्री, पुरोहित, रावल तथा स्थायी सदस्यों की विधि अवश्य होगी।

(स) प्रत्येक शाखाश्रम को अपनी तहसील के प्रत्येक गांव में एक मन्दिर धर्मशाला, कीर्तन-भवन, पुस्तकालय अवश्य बनाने होंगे। प्रत्येक गांव के ग्राम आश्रम में एक कमेटी होगी जो उसको चलावेगी। प्रत्येक ग्राम आश्रम का सभी विधान शाखाश्रम को बनाना होगा। प्रत्येक गांव में श्रीमद्भगवद्गीता आदि वैदिक धर्म प्रचार अवश्य करना होगा। श्री गीता लेक्चर व कीर्तन व्यवस्था प्रत्येक स्थान में प्रत्येक रविवार को अवश्य करनी होगा।

(द) प्रत्येक शाखाश्रम में शाखा डाइरेक्टर गृहत्यागी होगा। उसका सम्बंध सीधे मुख्याश्रम के स्टाफ से होगा। प्रत्येक ग्राम आश्रम में भी ग्रामाश्रम-सभापति भी गृहत्यागी ही होगा।

(इ) सभी आश्रमों में मांस, मछली, मदिरा, धूमपान, लहसन, प्याज की सख्त मनाही होगी। छुआछूत खानपान भेद का प्रपञ्च नहीं करना होगा, दूषित चालचलन वाले को आश्रम के सम्पर्क में नहीं रक्खा जायगा। भेद भाव के विषय में मुख्याश्रम से शाखा के डाइरेक्टर पूछताछ कर सकते हैं।

(फ) इलाके में जो भी धार्मिक प्रथायें वेद व शास्त्रों के विरुद्ध हों जैसे बलिदान, नाचने वाले भूतों को पूजना, जागर लगाना, वेद विरुद्ध देवताओं के यहां नवरात्र मनाना वगैरह सरकार से मदद लेकर भी बन्द करना होगा।

२—शिक्षा-प्रचार:—

(अ) प्रत्येक शाखाश्रम को अपने इलाके में सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक शिक्षा का परिपुष्ट प्रचार करना होगा।

(ब) प्रत्येक शाखाश्रम को अपने इलाके में एक शिक्षा बोर्ड कायम करना होगा जिसमें बाक़ायदा चेयरमैन, सेक्रेटरी, खजान्चो, प्रचारक और मेम्बरों का स्टाफ होगा। यह कमेटी शाखाश्रम में रजिस्टर्ड होगी। इसका कर्त्तव्य होगा—प्रत्येक लड़का या लड़की के ४ वर्ष की उम्र समाप्त होते ही उसका अक्षरारम्भ संस्कार करवाकर लोअर-प्राइमरी में भर्ती करवा देना। इलाके की स्थिति देखकर लोअर-अपर प्राइमरी यथेष्ट तादाद में खुलवाना तदनुसार ही मिडिल तथा हाई स्कूलों को खोलना आवश्यकतानुसार मुख्याश्रम से मदद लेना।

(स) प्रौढ़ पाठशाला का भी प्रबन्ध करना। प्रत्येक व्यक्ति को कीर्तन, भजन, रामायण, गीता का बोध कराना और उसके साधन जुटाना। इन फण्डों के लिये मुख्याश्रम सरकार से मदद लेने का पूरा प्रयत्न करेगा।

(द) स्थान व ग्राम की प्राकृतिक स्थिति के अनुसार उस इलाके के निवासियों को नये २ उद्योग धन्दों को खोलने और लोगों को रचनात्मक कार्य्य सिखाने का भी प्रबन्ध करना शाखाश्रम के शिक्षा प्रचार बोर्ड को करना होगा। सहायक मुख्याश्रम रहेगा।

३—पौरोहित्य :—

(अ) प्रत्येक शाखाश्रम को अपने इलाके का पौरोहित्य विधान आश्रम की पुरोहित नियमावली के अनुसार करना होगा।

(ब) इलाके के पुराने पुरोहितों को रजिस्टर्ड करना, पुरोहित की योग्यता की जांच करना, योग्य पाकर आश्रम नियमावली का पालन करने का प्रतिज्ञा-पत्र लेकर कर्म-काण्ड की लिस्ट के अनुसार काम में लगा देना। और उसकी तनख्वाह बांध देना।

(द) इन पुरोहितों की जांच करना, परमनेन्ट करना या अयोग्यता और बुरे आचरण के लिये निकालना यह मुख्याश्रम के हाथ में रहेगा। मुख्याश्रम इस बात के लिये गवर्नमेण्ट से रजिस्ट्री करायेगा।

४—गृह-त्यागियों की व्यवस्था :—

(अ) प्रत्येक शाखाश्रम में अपने इलाके में पहुंचने वाले गृहत्यागी का पूरा हुलिया मय जन्म-गृह का भी लेना होगा और रजिस्टर में दर्ज करना होगा। जो गृह-त्यागी इस बात के लिये मंजूर न हो, उसको इलाके में न रहने देना।

(घ) योग्य गृह-त्यागी को सत्कार-पूर्वक आश्रम में तीन दिन तक रोकना उसको किसी उपयुक्त काम में लगाना। यदि किसी साधु को भोजन वस्त्र के भी बिना किसी नशेबाजी के कारण संसार को होश न हो उसको न छेड़ना। उसकी जांच कर सेवा करना।

(स) जो साधु के भेष में नशेबाज (तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, सुलफा, गांजा, अफीम, मांस, मदिरा आदि फन्दों वाला) घूमता हो, उसको पकड़कर उसका पक्का इन्तजाम करना यहां तक कि पटवारी या पुलिस के हवाले कर देना।

(ह) इस किस्म के गृह-त्यागियों के विषय में गृहस्थियों को सचेत कर देना। उनको घर पर भी बैठने न देना, भिक्षा वस्त्र न देना। सब शिक्षा देनी होगी।

(ई) जो पात्र, साधु-सन्त, विदेशों से श्री कैलास यात्रा की आकांक्षा से आते हों उनको अपना प्रमाण पत्र देकर मुख्याश्रम की ओर बढ़ा देना।

(फ) जो गृह-त्यागी शाखाश्रम या ग्रामाश्रम में साधना के साथ धर्म-प्रधान शिक्षा-प्रचार में नियुक्त हो गये हों उनको भोजन, वस्त्र, तीर्थाटन की व्यवस्था आश्रम करेगा।

५—श्री कैलास-यात्रा :—

(अ) मुख्याश्रम के मुख्य उद्देश्यों में श्री कैलास-यात्रियों को सुविधा पहुंचाना है।

(ब) साधु-सन्त-महात्मा कैलाश यात्रा की इच्छा रखने वाले मुख्याश्रम से एक महिने पहिले ही से

पत्र व्यवहार करें। उनकी स्थिति के अनुसार उनकी यात्रा का प्रबन्ध करना। मुख्याश्रम का कर्त्तव्य होगा।

(ख) जो लोग अपने रुपये से श्री कैलास यात्रा करना चाहते हों उनको वैसी ही व्यवस्था करनी होगी।

(ह) आश्रम के ट्रस्टी और सदस्य भी आश्रम पार्टी के साथ अपने खर्चे से यात्रा कर सकते हैं। शक्ति के अनुसार आश्रम भी सहायता पहुंचावेगा।

(क) श्री कैलास यात्रियों को पत्र-व्यवहार जून ३० तारीख तक निश्चित कर लेना होगा। तभी भोजन वस्त्र के इन्तजाम का अन्दाज़ा आ सकता है। ताकि वक्त पर व्यर्थ ही परेशानी व नुकसान न उठाना पड़े।

(ज) आश्रम से सम्बन्ध न रखने वाले सज्जनवृन्द भी मुख्याश्रम मंत्री से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं तथा अपनी यात्रा का ठीक २ प्रबन्ध करा सकते हैं।

श्रीमान् डाइरेक्टर महोदय :—

श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज,

बी० ए० वेदान्ताचार्य,

सेक्रेटरी :—

पं० लीलाधर शास्त्री,

आङ्गिरस,

श्री गीता-सत्संग-आश्रम, मुक्तधारी,

जि० अल्मोड़ा, हिमालयराज, यू० पी० इण्डिया,

१ जुलाई, सन् १६४६ ई०